eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

न्याय–वैशेषिक का परमाणुवाद

[1]रत्नेश विश्वकर्मा
[1]शोधछात्र, संस्कृत–विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

सभ्यता के प्रारम्भ से जब मनुष्य चिन्तन करना प्रारम्भ किया होगा, तब उसने यह विचार किया होगा कि वस्तुतः मैं कौन हूँ? हम सब कौन हैं? हम लोगों का वास्तविक स्वरूप क्या है? हम लोगों के अतिरिक्त किसी अलौकिक चेतन की सत्ता है? यदि है तो वस्तुतः उसका स्वरूप क्या है? यह दृश्यमान् जगत् क्या है? कैसे उत्पन्न हुआ है? किसने उत्पन्न किया है? आदि इसी तरह की बहुत सी जिज्ञासाएँ उत्पन्न हुई होगी तथा इन जिज्ञासाओं के शमन के लिए चिन्तन किया होगा और यही चिन्तन आगे चलकर सूक्ष्मतर होकर दर्शन का रूप धारण कर लिया होगा, जिससे कई प्रस्थान विकसित हुए होंगे।

Keywords- रूढ़िवाद, न्याय, वैशेषिक का परमाणुवाद।

परिचय

इस जीव, जगत् और परमतत्त्व की व्याख्या करना ही दर्शन का उद्देश्य है। सभी दर्शनों ने सृष्टि की व्याख्या अलग–अलग ढंग से किया है। अद्वैत वेदान्त इस दृश्यमान् जगत् को मायोपहित ब्रह्म में ही प्रतिभासित मानता है। सांख्य दर्शन इस सृष्टि को अचेतन प्रकृति का परिणाम सिद्ध करता है, तो न्याय–वैशेषिक इस जगत् को परमाणुओं से उत्पन्न मानता है।

न्याय–वैशेषिक की मान्यता है कि जीवों के भोग के सम्पादन के लिए 'एकोऽहं बहु स्याम्' इस श्रुति के अनुसार परमेश्वर को सृष्टि उत्पन्न करने की इच्छा उत्पन्न होती है। तब सभी आत्माओं के अदृष्ट की कुण्ठित शक्ति कार्यों के उत्पादन के लिए फिर से उन्मुख हो जाती है। उसकी इच्छामात्र से ही समस्त परमाणुओं में क्रिया उत्पन्न होती है, उस क्रिया से सजातीय दो–दो परमाणुओं का परस्पर संयोग होता है, अर्थात् पृथिवी के परमाणुओं का पृथिवी के परमाणुओं के साथ, और जल के परमाणुओं का जल के परमाणुओं के साथ और तेज के परमाणुओं का तेज के परमाणुओं के साथ, और वायु के परमाणुओं का वायु के परमाणुओं के साथ संयोग होता है, इसे सजातीय परमाणुओं का संयोग कहते

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

हैं। परमाणुओं की कोई कमी नहीं है, वे अनन्त हैं, असंख्य हैं। इस प्रकार सजातीय दो–दो परमाणुओं के क्रियाजन्य संयोग से द्वयणुक की उत्पत्ति कार्य के रूप में होती है। यह कार्यरूप द्वयणुक असंख्य हैं। उसके बाद उन द्वयणुकों में भी पुनः क्रिया होती है, उससे सजातीय तीन–तीन द्वयणुकों का परस्पर संयोग होता है, उससे असंख्य त्र्यणुक कार्य की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार त्र्यणुक कार्यों की उत्पत्ति के अनन्तर उन त्र्यणुकों में पुनः क्रिया उत्पन्न होती है। उस क्रिया से सजातीय चार–चार त्र्यणुकों का परस्पर संयोग होता है, उस संयोग से असंख्य चतुरणुक कार्य की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार पाँच चतुरणुक मिलकर दूसरे पंचाणुक नामक स्थूलतर कार्य को उत्पन्न करते हैं। तदनन्तर पंचाणुकसंज्ञक स्थूलतर कार्यरूप अवयव परस्पर मिलकर दूसरे स्थूलतम कार्य को उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार पूर्व–पूर्व कारण की अपेक्षा करते हुए उत्तर–उत्तर स्थूल कार्य की उत्पत्ति का क्रम चलता रहता है। तब महान् पृथिवी, महान् जल, महान् तेज और महान् वायु उत्पन्न होते हैं।

कार्यरूप पृथिवी आदि में रहने वाले रूप आदि गुण अपने आश्रय के समवायिकारण में रहने वाले रूप आदि गुणों से उत्पन्न होते हैं। क्योंकि यह नियम है 'कारणगुणा हि कार्यगुणानारभन्ते' अर्थात् कारण के गुण ही कार्य के गुणों को उत्पन्न करते हैं। इन कार्यरूप पदार्थों– द्वयणुक, त्र्यणुक, चतुरणुक तथा पंचाणुक के समवायिकारण क्रमशः परमाणु, द्वयणुक, त्र्यणुक तथा चतुरणुक हैं। असमवायिकारण इनके परस्पर संयोग हैं। ईश्वर, ईश्वरज्ञान, ईश्वरेच्छा, कृति, काल, दिशा, प्रागभाव, जीवात्मा का अदृष्ट तथा प्रतिबन्धकाभाव ये नौ इन द्वयणुकादि कार्य पदाथों के निमित्त कारण होते हैं। इन नौ कारणों को सभी कार्यमात्र के प्रति साधारण कारण कहा जाता है। इस प्रकार से इस सृष्टि का सृजन होता है।

न्याय–वैशेषिक के इस परमाणुवाद में कई प्रकार के प्रश्न उपस्थित होते हैं। यथा– परमाणु किसे कहते हैं? परमाणुओं का स्वरूप क्या है? इसे चेतन क्यों नहीं माना जाता है? इसमें प्रमाण क्या है? परमाणुओं में संयोग के लिए क्यों ईश्वर की आवश्यकता पड़ती है? दो परमाणुओं से ही अणुपरिमाणयुक्त द्वयणुक क्यों उत्पन्न होता है? तीन द्वयणुकों से त्रसरेणु की उत्पत्ति क्यों मानी जाती है? तीन त्रसरेणुओं से चतुरणुक कैसे उत्पन्न होता है? जब परमाणुओं में कोई आयाम नहीं है तो आयामी कार्यों की उत्पत्ति कैसे सम्भव है? आदि।

शास्त्रवचन 'लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः' के अनुसार विना लक्षण और प्रमाण के किसी पदार्थ का ज्ञान सम्भव नहीं है, अतः परमाणु का लक्षण है– 'मनोभिन्नत्वे सति परमाणुत्वपरिमाणवान् परमाणुः' अर्थात् जो द्रव्य मन से भिन्न रहता हुआ समवाय सम्बन्ध से परम अणुत्व परिमाण वाला हो, उस द्रव्य

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

को परमाणु कहते हैं। पृथिवी, जल, तेज और वायु इन चारों के परमाणु मन से भिन्न हैं तथा समवाय सम्बन्ध से अणुत्व परिमाण वाले भी हैं। अतः परमाणु का लक्षण ठीक है। महर्षि गौतम परमाणु का लक्षण किये हैं–'परं वा त्रुटेः' अर्थात् त्रुटि से भी अत्यन्त सूक्ष्म द्रव्य को परमाणु कहा जाता है। झरोखे में सूर्य की किरणों के पड़ने से जो सूक्ष्म रजः प्रतीत होता है, उसको त्रुटि नाम से कहा जाता है, त्रुटि, त्रसरेणु एवं त्र्यणुक ये तीनों पर्यायवाची शब्द हैं, जो त्रुटि से अत्यन्त सूक्ष्म अर्थात् उसके अवयवभूत द्वयणुक का अवयव स्वयं निरवयव होने से नित्य द्रव्य है, वही परमाणु कहलाता है।

इस परमाणु की सिद्धि में यह अनुमान प्रमाण है कि त्रसरेणु अपने से छोटे परिमाण वाले द्रव्य से उत्पन्न हुआ है, क्योंकि वह कार्यद्रव्य है, जैसे–घट। क्योंकि यह नियम है कि महद् द्रव्य का आरम्भक कार्यद्रव्य ही होता है। इसका तात्पर्य यह है कि जाली में सूर्य की किरणों के आने से छोटे–छोटे रजःकण दिखलाई देते हैं, जो कि अन्य सभी दृश्यमान द्रव्यों से सूक्ष्म होते हैं, वे रजःकण कार्यरूप हैं, क्योंकि चक्षु से दिखलाई देते हैं। जिस प्रकार घट नामक कार्यद्रव्य अपने से छोटे परिमाण वाले कपाल आदि द्रव्यों से बनता है उसी प्रकार रजःकण नामक कार्यद्रव्य भी अपने से छोटे परिमाण वाले द्रव्यों से बना होगा, यह अनुमान किया जाता है। इस अनुमान से त्र्यणुक के आरम्भक उनसे छोटे द्रव्यों की सिद्धि होती है, वे ही द्वयणुक कहलाते हैं।

त्र्यणुक के आरम्भक को ही परमाणु क्यों नहीं मान लेते? इसके समाधान में कहा गया है कि त्र्यणुक का आरम्भक द्रव्य कार्य ही हो सकता है, क्योंकि त्र्यणुक चक्षु द्वारा गृहीत होता है, अतः वह महत् परिमाण वाला है, यह निश्चित है। तथा यह भी नियम है कि जो महत् परिमाण वाले द्रव्य के आरम्भक होते हैं, वे कार्य द्रव्य ही होते हैं। निष्कर्षतः त्र्यणुक के आरम्भक जो द्रव्य सिद्ध होते हैं, वे कार्यद्रव्य ही हैं, उन्हें द्वयणुक कहते हैं।

द्वयणुक के जो आरम्भक हैं, वे परमाणु कहलाते हैं। चूँकि द्वयणुक भी एक कार्य द्रव्य है, इसलिए यह अनुमान किया जाता है कि वह अपने से छोटे परमाण वाले द्रव्यों से बना है, यथा घट। इस द्वयणुक से छोटे परिमाण वाले परमाणु ही हैं। अतः द्वयणुक के आरम्भक द्रव्य परमाणु हैं, यह सिद्ध होता है। न्याय वैशेषिक का मन्तव्य है कि परमाणु किसी का कार्य नहीं होता, अपितु नित्यद्रव्य है।

यहाँ एक शंका होती है कि न्या०वै० में परमाणु को द्वयणुक का आरम्भक माना जाता है। द्वयणुक एक कार्य द्रव्य है, तथा नियम यह है कि जो कार्यद्रव्य का आरम्भक होता है, वह कार्यद्रव्य होता है। अतः परमाणु भी एक कार्यद्रव्य ही होना चाहिए। तो उसे नित्य क्यों माना जाता है?

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

इसके समाधान में कहना है कि जो कार्यद्रव्य का आरम्भक होता है, वह कार्यद्रव्य ही होता है, इस नियम को नहीं माना जा सकता है, क्योंकि इस नियम के अनुसार किसी द्रव्य के अवयव कार्यरूप होंगे, उन अवयवों के अवयव भी कार्यरूप होंगे और इस प्रकार इस कार्यपरम्परा का कहीं अन्त न होगा, अतः अनवस्था हो जायेगी। यदि प्रत्येक कार्यद्रव्य के अनन्त अवयव होंगे तो मेरुपर्वत जैसे विशालतम अवयवी के भी अनन्त अवयव होंगे तथा सरसों के छोटे दाने के भी अनन्त अवयव होंगे। इस प्रकार दोनों का तुल्य परिमाण होने लगेगा, क्योंकि दोनों के अनन्त अवयव हैं। इसलिए परमाणु को कार्यद्रव्य सिद्ध करने के लिए जो अनुमान दिया गया है, उसमें प्रतिकूल तर्क बाधक है। निष्कर्षतः यह स्वीकार ही करना पड़ता है कि अवयव–धारा की कहीं विश्रान्ति होती है। अन्तिम अवयव ही परमाणु कहलाता है। वह नित्य है।

उन परमाणुओं में से किसी एक से ही कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती क्योंकि इससे सभी समय कार्योत्पत्ति की आपत्ति होगी। कारण कि उसे दूसरे की अपेक्षा नहीं है। अगर एक ही नित्य वस्तु से कार्य की उत्पत्ति माने तो कार्य का विनाश ही असम्भव होगा, क्योंकि कार्यों का नाश दो ही वस्तुओं से सम्भव है– एक आश्रय के नाश से अर्थात् समवायिकारण के नाश से तथा दूसरा अवयवों के विभाग से अर्थात् असमवायिकारण के नाश से। ये दोनों ही प्रकार नित्य वस्तु से कार्यों की उत्पत्ति मान लेने पर असम्भव हैं।

तीन परमाणु भी मिलकर कार्य को उत्पन्न नहीं कर सकते, क्योंकि तीन परमाणुओ से जो बनेगा वह अवश्य ही महान् होगा। महत्परिमाण के कार्यद्रव्य का यह स्वभाव सर्वत्र देखा जाता है कि उसकी उत्पत्ति उसके परिमाण से न्यून परिमाण वाले कार्यद्रव्यों से होती है।

तस्मात् त्र्यणुक कार्यद्रव्यों से उत्पन्न होता हैं क्योंकि उसमें महत्परिमाण है, जैसे घटादि। इससे एक परमाणु से और तीन परमाणुओं से कार्य की उत्पत्ति खण्डित हो जाने पर यह सिद्ध होता है कि दो परमाणुओं से ही कार्य की उत्पत्ति होती है एवम् उस कार्य का नाम द्वयणुक है। यह भी निश्चित ही है कि दो से अधिक द्वयणुकों से ही कार्य की उत्पत्ति हो सकती है, दो द्वयणुकों से नहीं। क्योंकि दो द्वयणुकों से उत्पन्न कार्य का परिमाण अणु ही होगा, क्योंकि उसके परिमाण में अणु परिमाण को ही उत्पन्न करने का सामर्थ्य है। दो द्वयणुकों से जिस अणु परिमाण वाले द्रव्य की उत्पत्ति होगी, उसका उत्पन्न होना ही व्यर्थ है। दो से अधिक कितने द्वयणुकों से कार्य की उत्पत्ति होती है? इसका कोई नियम नहीं है। कभी तीन द्वयणुकों से ही कार्य की उत्पत्ति होती है तो कभी चार या पाँच द्वयणुकों

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

से कार्योत्पत्ति की यथेच्छ कल्पना की जा सकती है। इस पक्ष में कार्योत्पत्ति की व्यर्थता नहीं है, क्योंकि जिस क्रम से कारणों की संख्या में अधिकता होगी उसी क्रम से उनके कार्यों में परिमाण तारतम्य भी बढ़ता जायेगा किन्तु इससे द्व्यणुक में साक्षात् घट की उत्पादकता सिद्ध नहीं होती है, क्योंकि घट के नष्ट होने पर अन्य छोटे–बड़े अवयव दीख पड़ते हैं, उसी के अनुसार द्व्यणुक से उत्पन्न होने वाले कार्य की कल्पना करते हैं। तस्मात् परमाणुओं से द्व्यणुकादि क्रम से कार्य रूप पृथिव्यादि की उत्पत्ति होती है।

इस परमाणु की सिद्धि में शास्त्र भी प्रमाण है– 'जालसूर्यमरीचिस्थं यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः। तस्य षष्ठतमो भागः परमाणुः स उच्यते।।' और 'यस्मान्नाल्पतरोऽस्ति यः परमोऽल्पस्तत्र निवर्तते। यतश्च नाल्पीयोऽस्ति तं परमाणुं प्रचक्ष्महे।।'

इस पर एक प्रश्न उठता है कि परमाणुओं को चेतन क्यों नहीं माना जाता है? इसके उत्तर में कहना है कि परमाणुओं को चेतन मान लेने से उनमें जो जडता है उसकी हानि हो जायेगी। कहने का तात्पर्य है कि हम यह प्रत्यक्षतः देखते हैं कि घटादि पदार्थ अचेतन है, तो इससे इनके अचेतन कारणों का अनुमान होता है तथा परम्परया परमाणु भी अचेतन ही हैं। यदि परमाणुओं को भी चेतन माना जाये तो घटादि भी चेतन होने लगेंगे जो कि प्रत्यक्षविरुद्ध है।

दो परमाणुओं के संयोग के लिए ईश्वर को मानना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि प्रलयावस्था में जब सभी परमाणु विखण्डित रहते हैं तो सृष्टि के आदि में परमाणुओं में क्रियायें उत्पन्न होती हैं, जिससे दो परमाणुओं में संयोग होता है, जिससे द्व्यणुकों की उत्पत्ति होती है। प्रयत्न क्रिया का कारण है, क्योंकि प्रयत्न से ही क्रिया उत्पन्न होती है। प्रयत्न चेतन का धर्म है। चैतन्य एवं जडता ये दोनों परस्पर विरुद्ध धर्म हैं। परमाणु जड है, यदि द्व्यणुक की उत्पत्ति के प्रयोजक संयोग के अनुकूल क्रिया के जनक प्रयत्न का आश्रय परमाणुओं को ही मान लेंगे तो परमाणुओं को भी चेतन मानना होगा। अतः जिस प्रकार चेष्टारूप क्रिया विशेष प्रकार की क्रिया होने से ही स्वसमानकालिक किसी प्रयत्न से उत्पन्न होती है, उसी प्रकार सृष्टि की आदि की परमाणुओं की यह संयोगजनक क्रिया भी स्वसमानकालिक किसी प्रयत्न से उत्पन्न होती है, क्योंकि वह भी विशेष प्रकार की क्रिया है। इस प्रयत्न का आश्रय कोई शरीरी आत्मा नहीं हो सकता। अतः इस प्रयत्न का आश्रय किसी अशरीरी आत्मा को मानना होगा जिसे हम ईश्वर कहते हैं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

न्याय–वैशेषिक में परमाणुओं को निरवयव माना गया है, इसमें आयाम नहीं होता है, यह अतीन्द्रिय है, तो इस पर यह प्रश्न उठता है कि इन परमाणु से उत्पन्न कार्यद्रव्यों में आयाम कैसे उत्पन्न हो जाता है? इस पर नैयायिकों का कहना है कि कार्य के गुणों की उत्पत्ति के विषय में यह कोई नियम नहीं है कि केवल कारण के ही गुण कार्य में उत्पन्न हों, यह भी नियम नहीं कि कारण के सभी गुण कार्य में उत्पन्न हों, तथा यह भी नियम नहीं कि कार्य के सभी गुण उसके कारण में ही रहें। कार्यद्रव्यों में जो आयामत्व है, वह कारणों के विशेष संयोग से उत्पन्न होता है, वह जन्य गुण है, स्वाभाविक नहीं। जैसे वर्तमान युग के स्मार्टफोन, टी.वी., कम्प्यूटर आदि के स्क्रीन में जो पिक्सल हैं, वे इस प्रकार से संयुक्त होते हैं कि हम सबको उसमें किसी विशेष आकार की प्रतीति होने लगती है। जबकि वह आकार उन पिक्सलों में नहीं होता है। इसी प्रकार से यद्यपि परमाणुओं में आयाम नहीं है फिर उन परमाणुओं के विशेष प्रकार से संयोग से यह आयाम उत्पन्न हो जाता है।

निष्कर्षतः ये परमाणु अनन्त तथा अचेतन हैं। पृथिवी, जल, तेज तथा वायु इन चार भूतों के ही परमाणु होते हैं। जब ईश्वर को सृष्टि करने की इच्छा होती है तो इन परमाणुओं में संयोग होता है, जिससे द्व्यणुकादि क्रम से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति होती है। न्याय–वैशेषिक के इस परमाणुवाद से सृष्टि की उत्पत्ति की व्याख्या हो जाती है तथा इस सिद्धान्त की स्वीकृति में जितने भी प्रश्न उपस्थित होते हैं, उन सबका निराकरण किया गया है। यदि कोई और प्रश्न उपस्थित होता है तो उसका भी समाधान प्रस्तुत किया जायेगा।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

संदर्भ सूची–

1– न्यायसूत्र 4.2.17
2– तच्च द्रव्यं कार्यमेव महद्द्रव्यारम्भकस्य कार्यत्वनियमात्। तर्कभाषा।
3– तथा च सत्यनन्तद्रव्यारब्धत्वाविशेषेण मेरुसर्षपयोरपि तुल्यपरिमाणत्वप्रसंगः। वही